आधुनिक समाज में स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी का संतुलन

स्वतंत्रता, एक अवधारणा के रूप में, बहुआयामी है। इसमें बिना किसी अनावश्यक बाधा के सोचने, चुनने, कार्य करने और खुद को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता शामिल है। आधुनिक विश्व में, **स्वतंत्रता लोकतांत्रिक समाजों की आधारशिला है**, जहाँ व्यक्तियों को अपने भाग्य को आकार देने का अधिकार है।

हालाँकि, इस अपार विशेषाधिकार के साथ **महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारियाँ** भी आती हैं। ज़िम्मेदारी किसी के कार्यों के संभावित परिणामों की स्वीकृति और दूसरों के अधिकारों एवं भलाई का सम्मान करने वाले तरीके से कार्य करने का कर्तव्य है। यह **नैतिक दिशा-निर्देश** है जो व्यक्तियों को अपनी स्वतंत्रता का उपयोग इस तरह से करने में मार्गदर्शन करता है जो समाज में सकारात्मक योगदान देता है।

यह धारणा कि **"स्वतंत्रता के साथ ज़िम्मेदारी भी आती है"** एक मौलिक नैतिक सिद्धांत को रेखांकित करती है कि **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** का प्रयोग इस तरह से किया जाना चाहिये कि दूसरों के अधिकारों और कल्याण का सम्मान हो। यह लेख इस सिद्धांत के नैतिक आयामों पर गहराई से चर्चा करता है तथा **व्यक्तिगत आचरण, सार्वजनिक चर्चा और सामाजिक शासन** सहित विभिन्न संदर्भों में इसके निहितार्थों की खोज करता है।

स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी का नैतिक ढाँचा क्या है?

- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और इसकी सीमाएँ:**
  - **लोकतांत्रिक समाजों** में, नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मतदान देने की स्वतंत्रता, सार्वजनिक चर्चा में भाग लेने और अपने नेताओं को जवाबदेह ठहराने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है।
  - हालाँकि, यह स्वतंत्रता **निरपेक्ष** नहीं है। नैतिक विचार तब सामने आते हैं जब वाक् हिंसा को भड़काता है, गलत सूचना फैलाता है या दूसरों को नुकसान पहुँचाता है।
    - उदाहरण के लिये, **घृणास्पद भाषण(hate speech)**, अर्थात् ऐसा भाषण जो जाति, धर्म या लैंगिक अभिविन्यास जैसी विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों या समूहों को लक्षित करता है, सामाजिक घृणा, मानवाधिकारों का उल्लंघन और हिंसा को उकसाने से संबंधित महत्त्वपूर्ण नैतिक चिंताओं को उत्पन्न करता है।
  - नैतिक ढाँचे सुझाव देते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग इस तरह से किया जाना चाहिये कि इससे **दूसरों के अधिकारों और सम्मान** का उल्लंघन न हो।
- **डिजिटल नागरिकता की ज़िम्मेदारी:**
  - डिजिटल युग में, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दायरा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को शामिल करने के लिये विस्तारित हो गया है। संचार और सूचना विनिमय के लिये एक वैश्विक मंच, इंटरनेट ने व्यक्तियों को **अभिव्यक्ति की अभूतपूर्व स्वतंत्रता** प्रदान की है।
  - सोशल मीडिया व्यक्तियों को अपने विचार साझा करने और वैश्विक दर्शकों से जुड़ने की अनुमति देता है। ऑनलाइन संसार द्वारा दी गई गुमनामी ने व्यक्तियों को अभद्र भाषा, साइबरबुलिंग और गलत सूचना के प्रसार में संलग्न होने के लिये प्रोत्साहित किया है।
    - हालाँकि, यह स्वतंत्रता **सम्मानपूर्वक और सोच-समझकर** बातचीत करने की ज़िम्मेदारी के साथ आती है।
  - नैतिक रूप से, व्यक्तियों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे जानकारी साझा करने से पहले उसे सत्यापित करें और ऑनलाइन चर्चा में इस तरह से शामिल हों जिससे संघर्ष के बजाय **रचनात्मक संवाद को बढ़ावा मिले।**
- **आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी:**
  - **आर्थिक स्वतंत्रता** व्यक्तियों और व्यवसायों को बाज़ार में कार्य करने और प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देती है। हालाँकि, इस स्वतंत्रता के साथ-साथ व्यावसायिक प्रथाओं में नैतिक रूप से कार्य करने की ज़िम्मेदारी भी जुड़ी हुई है।
    - **श्रम अधिकार, पर्यावरणीय स्थिरता और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा** जैसे मुद्दे आर्थिक गतिविधि के नैतिक विचारों के लिये केंद्रीय हैं।
  - व्यवसायों की ज़िम्मेदारी है कि वे पारदर्शी तरीके से कार्य करें, शोषण से बचें और समाज में सकारात्मक योगदान दें। इसमें कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार, सामग्रियों की नैतिक सोर्सिंग और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना शामिल है।
- **राजनीतिक भाषण और नैतिक शासन:**
  - **राजनीतिक नेताओं** और सार्वजनिक हस्तियों का जनमत और नीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है। अभियान चलाने और राजनीतिक विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के लिये मौलिक है।
    - हालाँकि, यह स्वतंत्रता हेरफेर, छल और कमज़ोरियों के शोषण से बचने की नैतिक ज़िम्मेदारी के साथ आती है।
  - **नैतिक शासन** के लिये आवश्यक है कि राजनीतिक प्रवचन सत्य और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के सम्मान पर आधारित हो। नेताओं की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने मंच का उपयोग **ध्रुवीकरण और संघर्ष को बढ़ाने के बजाय सूचित एवं सम्मानजनक सार्वजनिक चर्चा** को बढ़ावा देने के लिये करें।

- **मीडिया की स्वतंत्रता और नैतिक पत्रकारिता:**
  - मीडिया जनता को सूचित करने और सामाजिक दृष्टिकोण को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **प्रेस की स्वतंत्रता** एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिये आवश्यक है, क्योंकि यह सत्ता में बैठे लोगों के विविध दृष्टिकोण और जाँच की अनुमति देता है।
    - हालाँकि, **नैतिक पत्रकारिता** की मांग है कि इस स्वतंत्रता का ज़िम्मेदारी से प्रयोग किया जाए। पत्रकारों का कर्तव्य है कि वे सटीक रूप से रिपोर्ट करें, खबरों को सनसनीखेज़ बनाने से बचें और गोपनीयता का सम्मान करें।
  - **ज़िम्मेदार रिपोर्टिंग** में समाज पर व्यापक प्रभाव पर विचार करते हुए **सच्चाई और निष्पक्षता** को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।
- **पर्यावरण प्रबंधन और अंतर-पीढ़ीगत ज़िम्मेदारी:**
  - पर्यावरणीय स्थिरता एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक मुद्दा है जो स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी के नैतिक आयामों को उजागर करता है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने की स्वतंत्रता को **भविष्य की पीढ़ियों के लिये पर्यावरण को संरक्षित करने की ज़िम्मेदारी** के साथ संतुलित किया जाना चाहिये।
  - नैतिक प्रबंधन में ग्रह पर वर्तमान क्रियाओं के प्रभाव को पहचानना और पर्यावरणीय क्षति को कम करने के लिये सक्रिय उपाय करना शामिल है।
  - व्यक्ति, व्यवसाय और सरकारें स्थायी प्रथाओं को अपनाने एवं **प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने वाली नीतियों** का समर्थन करने की ज़िम्मेदारी साझा करती हैं।

स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी पर दार्शनिक दृष्टिकोण:

- **गांधीवाद: महात्मा गांधी** स्वतंत्रता को अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में नहीं देखते थे, **बल्कि अपने प्रति, अपने समुदाय और समग्र मानवता के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के साधन के रूप में देखते थे।**
  - उनके लिये, सच्ची स्वतंत्रता **आत्म-नियंत्रण** से शुरू होती है। उनका मानना था कि दूसरों पर शासन करने या राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग करने से पहले, व्यक्ति को पहले खुद पर शासन करना सीखना चाहिये। इस स्व-शासन में व्यक्ति के विचारों, कार्यों और इच्छाओं को अनुशासित करना शामिल था।
  - उनके लिये, स्वतंत्रता का सर्वोच्च रूप दूसरों की सेवा करने **और अधिक से अधिक अच्छे कार्य में योगदान करने की स्वतंत्रता थी।**
- **कांट का नैतिक सिद्धांत :** इमैनुअल कांट ने तर्क दिया कि सच्ची स्वतंत्रता **नैतिक कानूनों के अनुसार कार्य** करने से आती है जिसे हम तर्क के माध्यम से खुद पर लागू करते हैं।
  - यह स्व-लगाया गया कर्तव्य ज़िम्मेदारी का सार है- हम स्वतंत्र हैं क्योंकि हम नैतिक रूप से और सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुसार कार्य करना चुन सकते हैं।
- **सामाजिक अनुबंध सिद्धांत:** इस सिद्धांत के अनुसार, समाज में व्यक्ति संगठित समाज के लाभों और सुरक्षा के बदले में अपनी कुछ स्वतंत्रताओं को त्यागने के लिये सहमत होते हैं।
  - यह सिद्धांत बताता है कि समाज के भीतर हमारी स्वतंत्रता **सामाजिक मानदंडों और कानूनों का पालन करने की ज़िम्मेदारी** के साथ आती है।
- **उपयोगितावाद:** उपयोगितावाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन करता है जब तक कि यह **समग्र खुशी और कल्याण** में योगदान देता है।
  - व्यक्ति यह सुनिश्चित करने के लिये ज़िम्मेदार हैं कि उनके कार्य दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ और सामूहिक कल्याण में योगदान दें। ज़िम्मेदारी का पहलू दूसरों की खुशी के खिलाफ अपने कार्यों के परिणामों को तौलने की आवश्यकता से उत्पन्न होता है।
- **अस्तित्ववादी:** जीन-पॉल सार्त्र जैसे अस्तित्ववादी दार्शनिकों ने प्रस्तावित किया कि मनुष्य **"स्वतंत्र होने के लिये अभिशप्त" हैं** और इसलिये वे अपने विकल्पों और कार्यों के लिये पूरी तरह से ज़िम्मेदार हैं।
  - सार्त्र के लिये, यह ज़िम्मेदारी न केवल व्यक्तिक बल्कि पूरी मानवता तक फैली हुई है, क्योंकि हमारे विकल्प उस संसार को आकार देते हैं जिसमें हम रहते हैं और दूसरों के लिये उदाहरण स्थापित करते हैं।
- **व्यवहारवाद**: जॉन डेवी जैसे दार्शनिकों ने हमारे विश्वासों और कार्यों के व्यावहारिक परिणामों पर ज़ोर दिया।
  - इस दृष्टिकोण के अनुसार, स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी अमूर्त अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि हमारे जीवन एवं समुदायों में उनके व्यावहारिक प्रभावों के माध्यम से महसूस की जाती हैं।

ज़िम्मेदार स्वतंत्रता की संस्कृति को कैसे बढ़ावा दिया जाए?

- **आत्म-चिंतन और नैतिक तर्क:** व्यक्तियों को अपने विकल्पों और कार्यों की आलोचनात्मक जाँच करने की आदत विकसित करनी चाहिये, उनके नैतिक निहितार्थों पर विचार करना चाहिये।
- **नागरिक भागीदारी:** लोकतंत्र में नागरिकों को न केवल शासन में भाग लेने की स्वतंत्रता है, बल्कि सूचित रहने, मतदान करने और नागरिक प्रक्रियाओं में शामिल होने की ज़िम्मेदारी भी है।
- **डिजिटल नागरिकता:** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और इंटरनेट द्वारा प्रदान की गई जानकारी तक पहुँच के साथ-साथ इन उपकरणों का नैतिक रूप से उपयोग करने, दूसरों की गोपनीयता का सम्मान करने तथा गलत सूचना से निपटने की ज़िम्मेदारी भी होनी चाहिये।
- **नैतिक उपभोग:** मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था में, उपभोक्ताओं की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने क्रय निर्णयों के नैतिक निहितार्थों पर विचार करें, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव भी शामिल हैं।
- **नैतिक व्यावसायिक व्यवहार:** कंपनियों की ज़िम्मेदारी है कि वे **सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और पारदर्शिता** के साथ कार्य करें।
- **नैतिक शिक्षा:** सभी स्तरों पर शैक्षिक पाठ्यक्रम में **नैतिकता और आलोचनात्मक सोच** को शामिल करना। शिक्षा प्रणाली की ज़िम्मेदारी है कि वह सम्मान, सहिष्णुता और नागरिक जुड़ाव की संस्कृति को बढ़ावा दे।
- **सामाजिक सामंजस्य**: संघ की स्वतंत्रता **समावेशी समुदायों** का निर्माण करने और विभिन्न समूहों के बीच के अंतर को कम करने की ज़िम्मेदारी के साथ आती है।
- **पर्यावरण संरक्षण:** प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने की स्वतंत्रता के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिये पर्यावरण की रक्षा करने की

ज़िम्मेदारी भी होनी चाहिये।

- **वैश्विक सहयोग:** राष्ट्रों को अपने हितों को आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता के साथ जलवायु परिवर्तन, महामारी और गरीबी जैसे वैश्विक मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में संलग्न होने की ज़िम्मेदारी भी आती है।
- **सांस्कृतिक संरक्षण**: जैसे-जैसे वैश्वीकरण सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ाता है, सार्वभौमिक मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए विविध सांस्कृतिक विरासतों को संरक्षित करने की ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है।

निष्कर्ष

"स्वतंत्रता के साथ ज़िम्मेदारी आती है" का सिद्धांत एक मौलिक नैतिक सत्य को समाहित करता है: व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रयोग दूसरों और संपूर्ण समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिये। चाहे व्यक्तिगत आचरण हो, सार्वजनिक प्रवचन हो या सामाजिक शासन हो, **स्वतंत्रता एक अनिवार्य अधिकार नहीं है, बल्कि यह नैतिक दायित्वों का एक समूह है।** नैतिक रूप से कार्य करने की ज़िम्मेदारी के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता को संतुलित करना एक **न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज** को बढ़ावा देने के लिये महत्त्वपूर्ण है।

इन नैतिक आयामों को संचालित करते हुए, **व्यक्तियों, संस्थानों और सरकारों को अपने कार्यों एवं** उनके परिणामों पर लगातार चिंतन करना चाहिये। ज़िम्मेदारी के सिद्धांत को बनाये रखना सुनिश्चित करता है कि स्वतंत्रता सामाजिक प्रगति में सकारात्मक योगदान दे, न कि उसे कमज़ोर करे। इस नैतिक ढाँचे को अपनाकर, हम एक ऐसा विश्व बना सकते हैं जहाँ स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी एक साथ इस तरह से मौजूद हों कि मानवीय गरिमा का सम्मान हो और अच्छे कार्य को बढ़ावा मिले।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमें याद रखना चाहिये कि **सच्ची स्वतंत्रता बाधाओं की अनुपस्थिति नहीं है**, बल्कि नैतिक विचारों और जिम्मेदारी की भावना द्वारा निर्देशित सार्थक विकल्पों की उपस्थिति है। इस समझ को अपनाने से हम अपने लिये तथा आने वाली पीढ़ियों के लिये एक बेहतर विश्व बनाने हेतु मानव स्वतंत्रता की क्षमता को पूरी तरह से साकार कर सकते हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/the-balance-of-freedom-and-responsibility-in-modern-society